भारतीय चित्रकला के परिवर्तित परिवेश

डॉ0 सुनीता शर्मा,

असिस्टेंट प्रोफेसर–ललित कला विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ

प्रत्येक युग या काल में कला आधुनिक रही है। यह भी कहा जा सकता है कि एक कला विद्या की चरम परिणित के तुरन्त बाद एक नयी कला का रूप उभर कर सामने आया।

आज के परिवेश में देखे–तो भारतीय चित्रकार आधुनिक कला से प्रभावित आवश्य हुआ है। परन्तु यह सत्य है कि प्राचीन आदर्शवादी पारम्परिक चित्र शैलियों से प्रेरणा ग्रहण करके नवीन चिन्तन के साथ परम्परावादी कलाओं को भी जीवन्त बनाते चले आ रहे है क्योंकि आधुनिक कला को किसी सीमा रेखा में नहीं बाधा जा सकता है। इस कारण भारतीय चित्रकारों की कलाकृतियों में विश्व की कला शैलियों का प्रभाव पड़ा है। यह प्रभाव कम या अधिक हो सकता है। एक ओर जहां भारतीय कला का पांच हजार से भी अधिक दिनो का इतिहास रहा है। वहीं भारतीय कला पर यूनानी, मुगल और अंग्रेजों की अकादमिक कला और पश्चात्य आधुनिक कलावादों एवं शैलियों का प्रभाव दिखाई देता रहा है। भारत के आधुनिक कला को पश्चात्य कलावादों का अन्धानुकरण कहने मात्र से कार्य नहीं चल सकता। विदेशों के संग्रहालयों में भारत के पारम्परिक कलाकृतियों को सहेज कर प्रदर्श के रूप में प्रस्तुत करना भारतीय कला के प्रति जिज्ञासा मात्र नहीं माना जा सकता। भारत की जितनी भी कला परम्पराएँ पल्लवित हुई वे एक दूसरे से प्रेरणा ग्रहण करके नव–विकास की ओर अभिप्रेरित हुई। अजन्ता की कला–शैली उस समय तक आधुनिक शैली थी जो यूनानी, मुगल अंग्रेजी या अन्य विदेशी कलाओं से प्रभावित रही इसका कोई ठोस प्रमाण नहीं मिलता, परन्तु यह कहा जा सकता है कि भारतीय कला शैलियाँ आधुनिक कला के तत्व के निष्कर्ष के अनुसार उत्कृष्ट मानी जाती है। एक प्रकार से यद्यपि यह माना जा सकता है कि भारतीय प्राचीन कलाकारों ने किस प्रकार शास्त्रीय अध्ययन किया होगा। इसका प्रमाण नहीं मिलता, लेकिन उससे भी इंकार नहीं किया जा सकता कि वेदों और पुराणों में इसके प्रमाण मिलते हैं। प्राचीन कलाकारों ने साधन के रूप में सहजभाव में कला तत्वों को सृजन का आधार बनाया। इसे आधुनिक कलाकारों ने भी अपनाया है और वे आधुनिक कलाकारों के साध्य बन गये हैं।

सांस्कृतिक आदान–प्रदान के कारण भारतीय कला पर यूनानी और ब्रिटिश कला का प्रभाव पड़ा। कालान्तर में सभी एक दूसरे से घुलमिल गये। भारतीय कला पर यूरोपीय प्रभाव तब से उत्तरोत्तर बढ़ता रहा और आज तक निरन्तर जारी है। इस तरह हम देखते हैं कि प्राचीन काल में यूनानी मूर्तिशिल्प से, मध्यकाल में ईरानी चित्रकला से और आधुनिक काल में यूरोप के मार्डन आर्ट से। ये तीनों प्रभाव न्यूनाधिक भारतीय कलाकृतियों में स्पष्ट रूप में नजर आते हैं। इस प्रकार भारतीय कला में अन्य शैलियों की अपेक्षा यूरोपीय प्रभाव ज्यादा गहराई से पड़ा था।

भारत के लिए आलोचक आनन्द कुमारास्वामी के सहयोग तथा प्रसिद्ध चित्रकार नन्दलाल बोस की सहायता से अवनीन्द्रनाथ ने भारतीय कला में नवजीवन का स्पन्दन प्रवाहित

करने का प्रयास किया। यह कहा जा सकता है कि पुनर्जागरण के कलाकार भारत के अतीत के कलात्मक गौरव की ओर उन्मुख हुए। भारत के कई कालों से आरम्भ कलात्मक भावना को उजागर करने की दिशा में अपनी आवाज को बुलन्द किया और एक नवीन दिशा की और इंगित किया।

हैवेल के कलकत्ता आ जाने से अवनीन्द्रनाथ की विचाराधाराओं को बल मिला और उन्होंने इस क्षेत्र में नवीन प्रयोग आरम्भ कर दिए। पूर्व कालीन शैलियों का अनुकरण भी करवाया। पुनरूत्थान के विचार से अंकित की गई। यह शैली प्राचीन भारतीय कला शैलियों की विशेषताओं को पूर्णतया ग्रहण न कर सकी। लेकिन यह भी कहा जा सकता है कि कला में विभिन्न गुण दोषों का होना स्वाभाविक ही था किन्तु परम्परा में नवीनता लाने का प्रयास भी माना जा सकता है। भारतीय कला के सौन्दर्यात्मक गुण पुनरूत्थान वादी शैली में अभाव था। इसको संक्रमण काल माना जाता है।

महिला चित्रकार अमृता शेरगिल की कला में पाश्चात्य तकनीक और पद्धति के अपनाये जाने के बाद भी भारतीय कला परम्पराओं को नवीन दृष्टिबोध था जो पुनरूत्थानवादी कला की स्वाभाविक चेतना कही जा सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आधुनिक भारतीय चित्रकला – डॉ0 गिरिराज–किशोर अग्रवाल
2. मार्डन आर्ट और भारतीय चित्रकार –राजेन्द्र बाजपेयी
3- National Herald Magazine
4- Indian and Modern Art London 1959
5- W.G. Archer